CHAPTER 41

MUSIC

Doctoral Theses

465. गुप्ता (सुजीत कुमार)
उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं का सौन्दर्यबोध ।
निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल
Th 16794

सारांश

शोध प्रबंध में उपशास्त्रीय संगीत के उदभव, स्वरूप एवं उसकी प्रगति पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सापेक्ष विहंगम दृष्टि रखी गई है । इसमें सांगीतिक सप्तक, मूर्च्छना पद्धति, ताल आदि का वर्णन किया गया है । सौन्दर्यशास्त्र की विस्तृत व्याख्या सहित हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विशाल एवं समृद्ध परंपरा में इसके विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा की गई है । उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं यथा - ठुमरी, दादरा, टप्पा, चैती, कजरी आदि के स्वरूपों को उदाहरण सहित सविस्तार वर्णित किया गया है । विभिन्न रसों का वर्णन करते हुए उपशास्त्रीय संगीत में प्रासंगिक रसों से विभिन्न विधाओं के संबंध पर चर्चा की गई है तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसकी उपयोगिता को भी दर्शाया गया है । उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं के सौन्दर्यपूर्ण प्रस्तुतिकरण में सहायक तत्त्वों की चर्चा की गई है ।

विषय सूची

1. उपशास्त्रीय संगीत का शास्त्रीय संगीत के सापेक्ष एक ऐतिहासिक विश्लेषण 2. उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाएँ 3. उपशास्त्रीय संगीत का सौन्दर्यशास्त्र से सम्बन्ध 4. उपशास्त्रीय संगीत रस के संदर्भ में 5. उपशास्त्रीय विधाओं के प्रस्तुतिकरण का सौंदर्य । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

466. चड्ढा (सीमा)

गीतिकाव्यों के माध्यम से वाद्यों का विवेचनात्मक अध्ययन : दसवीं से सोलहवीं शताब्दी तक ।

निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

Th 16788

सारांश

शोध प्रबंध में संगीत की संक्षिप्त भूमिका के साथ ध्वनि नाद की महिमा 'नादोपासना देवा ब्रह्म विष्णुमहेश्वराः' से अभिमंडित करके परिभाषित किया गया है। वैदिक काल में वाद्य संगीत की परम्परा को संक्षेप में उजागर किया गया है। वाद्य के अर्थ, उसके प्रादुर्भाव तथा शनैः-शनैः होते हुए विकास का विवेचन किया गया है। वाद्यों के पारम्परिक वर्गीकरण को विस्तार से बताते हुए, वाद्यों के महत्त्व को परिव्यक्त किया गया है। काव्य तथा गीति काव्य के वास्तविक अर्थ को समझते हुए अनुभूतियों तथा भावों की भाषा में विचरण करते हुए कवि की रचना के गूढ़तम रहस्यों का परिव्यक्त किया गया है। काव्य की उद्भावना तथा उपकरणों व भेदों को समझाया गया है। गीतिकाव्य के अर्थ, विकास के चरणों तथा विशेषताओं को विस्तार से वर्णित किया गया है। गीतिकाव्य तथा संगीत के अन्तर्सबन्ध को अनुभव करते हुए कुछ संगीतबद्ध छंदों को उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कविता की तकनीकी शैलियों तथा इकाईयों की चर्चा की गई है। वेद से सम्बन्धित वाद्यात्मक ज्ञान सभी खंडों में उपनिषद्रों व शिक्षाग्रंथों, महाकाव्यों, पाणिनी कृत अष्टाध्यायी, बौद्ध ग्रंथों, जैन ग्रंथों, स्मृतिग्रंथों तथा पुराणों सभी से प्राप्त वाद्यात्मक ज्ञान और वाद्यों से सम्बन्धित विविध संगीतात्मक पदों का संकलन है। इन सभी ग्रंथों से प्राप्त श्लोक निबद्ध वाद्यात्मक विवरण तथा इनसे सम्बन्धित वाद्यों के तत्कालीन रूपों तथा परिष्कृत रूपों को चर्चित किया गया है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्रको चर्चा का विषय बनाया गया है। कवि कुलगुरू कालिदास जी की अलम्य सात कृतियों से प्राप्य वाद्य उल्लेख सम्बन्धी पदों का संकलन किया गया है। कवि जयदेव के 'गीतगोविन्द' को वाद्यात्मक चर्चा का माध्यम बनाकर राधा-कृष्ण के वाद्य-सम्बन्धी पदों का उद्घाटन किया गया है। भारतीय संस्कृति तथा धर्म को आधार बनाते हुए भक्ति के अर्थ को उद्घाटित किया गया है। संगीत के अग्रणी वैष्णव धर्म के अवतार वाद की चर्चा करते हुए वैष्णव धर्म के चार आचार्यों के विचारों सम्बन्धी जानकारी दी गई है। वल्लभ सम्प्रदाय के अग्रणी आचार्य श्री वल्लभाचार्य जी के सगुण धारा सम्बन्धित

विचारों को पुष्टिमार्गीय भक्ति के माध्यम से परिव्यक्त किया गया है। सगुण धारा की ही परम्परा को अपने कंधों पर उठाने वाले पुष्टि सम्प्रदाय निर्देशित अष्टछाप भक्तों की रसमय भक्ति का गुणगान उनके वाद्याधारित पदों के माध्यम से विस्तार से किया गया।

विषय सूची

1. वाद्य, वाद्य का अर्थ, वाद्य का प्रादुर्भाव तथा इसके विकास की प्रक्रिया 2. काव्य तथा गीति काव्य का अध्ययनः गीतिकाव्य तथा संगीत का अन्तर्सबन्ध 3. वैदिक काल से पुराण काल तथा गीति रचनाओं में निहित संगीत विधान के अन्तर्गत आने वाले वाद्यों का विस्तृत विवरण 4. भरतमुनि, कवि कालिदास तथा जयदेव की संगीतात्मक रचनाओं में वाद्यों के विवरण तथा तत्कालीन परिवेश में वाद्यों के अस्तित्व 5. मध्यकालीन भक्ति साहित्य में अष्टछाप संगीतज्ञों की भक्ति रचनाओं में निहित वाद्यों का विवरण । उपसंहार, परिशिष्ठ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

467. चोपड़ा (शैली)

दिल्ली घराने मे प्रचलित गीत विधाओं का सौन्दर्य बोध ।

निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

Th 16791

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध हिन्दुस्तानी संगीत की घराना पद्धति का उल्लेख करता है। घराना शब्द का अर्थ उसकी व्युत्पत्ति तथा गायन के विभिन्न घराने तथा उनकी विशेषताओं की चर्चा करता है । दिल्ली घराने की वंश तथा शिष्य परम्परा का वर्णन करता है। हिन्दुस्तानी संगीत के दिल्ली घराने में प्रचलित विभिन्न गीत विधाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात किया गया है । शास्त्र की दृष्टि से दिल्ली घराने का अध्ययन किया गया है। दिल्ली घराने की विभिन्न बन्दिशों का राग, ताल व पद की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। दिल्ली घराने में प्रचलित विभिन्न गीत विधाओं का सौन्दर्यात्मक अध्ययन किया गया है तथा दिल्ली घराने के श्रेष्ठ कलाकारो द्वारा स्वरचित बन्दिशों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन किया गया है। दिल्ली घराने के कुछ कलाकारों के साक्षात्कार का वर्णन किया गया है ।

विषय सूची

1. हिन्दुस्तानी संगीत का दिल्ली घराना 2. दिल्ली घराने में प्रचलित विभिन्न गीत विधाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का दृष्टिपात 3. शास्त्र की दृष्टि से दिल्ली घराने की बन्दिशों का अध्ययन 4. दिल्ली घराने में प्रचलित गीत विधाओं का सौन्दर्यबोध 5. दिल्ली घराने के प्रशिक्षित कलाकारों से साक्षात्कार । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची।

468. पांचाली नन्दी

प्रो. ध्रुवतारा जोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व ।

निर्देशक : डॉ. प्रतीक चौधुरी

Th 16790

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध प्रो. ध्रुवतारा जोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करता है। प्रो. ध्रुवतारा जोशी जी न केवल एक महान कलाकार थे, बल्कि उच्च कोटि के रचनाकार भी थे। हिन्दी भाषा के साथ-साथ उर्दू, अंग्रेज़ी, बंगला भाषाओं में भी उनका अभूतपूर्व ज्ञान था। जोशी जी एक महान सितार वादक भी थे। उन्होंने देश भर में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। लेकिन दुर्भाग्यवश एक दुर्घटना के कारण उन्हें सितार छोड़ना पड़ा । अपने गायन तथा रचनाओं के ज़रिये उन्होंने इस सदमें को कम करने की कोशिश की। जोशी जी ने खूबसूरत सितार की बंदिशों के साथ-साथ ध्रुपद, ख्याल तथा ग़ज़ल की भी रचनाएँ की । जोशी जी ख्याल की रचनाएँ 'प्रेम रंग', ठुमरी की रचनाएँ : रसिक पिया' तथा गज़ल एवं शायरी : जुनु लखनोई' के नाम से करते थे ।

विषय सूची

1. जोशी जी का जन्म तथा परिवार 2. जोशी जी की सांगीतिक शिक्षा 3. जोशी जी का व्यक्तित्व 4. प्रो. डी. टी. जोशी एक उत्कृष्ट रचनाकार के रूप में 5. साक्षात्कार द्वारा प्राप्त की गई जानकारी 6. उपसंहार 7. संदर्भ ग्रंथ सूची ।

469. बिदानी (सोनिया)
वर्तमान परिपेक्ष्य में संगीत एवं उपासना का पारस्परिक सम्बन्ध ।
निर्देशिका : प्रो. मंजुश्री त्यागी
Th 16789

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में संगीत एवं उपासना के पारस्परिक संबंध का अध्ययन किया गया है। इसके अर्न्तगत उपासना को परिभाषित करते हुए उसके स्वरूप, निराकार-आकार उपासना, नाद का सगुण और निर्गुण रूप, उपासना के माध्यम तथा उपासना और कार्मकाण्ड का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इसमें वैदिक और पौराणिक उपासना, उपासना के विविध स्वरूप और वर्त्तमान संदर्भ में उपासना और संगीत के संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. उपासना का स्वरूप 2. उपासना का ऐतिहासिक क्रमः वैदिक व पौराणिक 3. उपासना के विविध स्वरूप 4. वर्तमान संदर्भ में उपासना और संगीत का सम्बन्ध। उपसंहार एवं संदर्भ-सूची ।

470. BHASKARAN (Nirmala)
Catholicity of Muthuswami Dikshithar in Praising Gods and Godheads in His Various Compositions.
Supervisor : Prof. Radha Venkatachalam
Th 16795

Abstract

Deals with the liberal ideals of spiritualism of Dikshitar from his compositions. Throws light on his musical accomplishments, His expertise in vyakarana of poetry and prose, Vedas, scriptures, mythology. Beyond all these aspects, the scholar has tried to identify the catholicity of the composer who has never confined his devotion to a specific God, whose ideals were not subjected to narrow theological, linguistic, spiritualistic or territorial barriers.

Contents

1. Uniqueness of Dikshitar as a composer. 2. The Grandeur of Dikshitar in singing praise of Lord Ganesha. 3. An inimitable mode of obeisance to Lord Guruguha- The Divine Preceptor. 4. Compositions on the various manifestations of the Primordial Goddess - Group Kritis. 5. A through insight into the Lilas of the Great Lord Shiva. 6. A study of the songs of Lord Vishnu. 7. Dikshitar's expertise in astrology relfected in Kritis on the planets. 8. Dikshitar's compositions on other Godheads. Conclusion and bibliography.

471. मिश्र (विशाल देव)

झारखंड के लोकगीत के परिप्रेक्ष्य में झूमर और घैरा के संगीत पक्ष का अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 16876

सारांश

झूमर और घैरा की परम्परा के अन्तर्गत झूमर से तात्पर्य, घैरा से तात्पर्य, झूमर-घैरा की विशिष्टताएँ, झूमर-घैरा के वाद्ययन्त्र, झूमर-घैरा गायकी की विशेषताएँ, झारखंड के विभिन्न अंचलों में झूमर-घैरा गायकी, नृत्य-परक झूमर-घैरा की गायकी और नृत्य का स्वरूप विवेचित किया गया है । झूमर और घैरा के रचनाकार भवप्रीतानन्द ओझा जी का परिचय, रचनाओं के प्रकार, स्वरूप, प्रसार तथा झूमर-घैरा का संक्षिप्त संगीत शास्त्रीय विवेचन किया गया है । झूमर और घैरा के रचनाकार उमानन्द ओझा जी का परिचय, उनकी रचनाओं के प्रकार, स्वरूप, प्रसार तथा झूमर-घैरा का संगीत शास्त्रीय विवेचन संक्षेप मे किया गया है । झूमर और घैरा के गायकों का संक्षिप्त परिचय देते हुए झूमर और घैरा के सागीतिक पक्ष पर विस्तार से विचार किया गया है ।

विषय सूची

1. झारखंड का परिवेश 2. संगीत 3. लोक-साहित्य 4. झूमर और घैरा की परम्परा 5. भवप्रीतानन्द ओझा 6. कवि भूषण श्री उमानन्द ओझा 7. शिरोमणि ठाकुर 8. झूमर - घैरा के गायक । उपसंहार एवं ग्रंथ सूची ।

472. मेहता (नमिता)

महान कलाकार कुन्दन लाल सहगल के जीवन के बहुमुखी व्यक्तित्व का मुल्यांकन ।

निर्देशिका : प्रो. गीता पेंतल

Th 16796

सारांश

शोध ग्रंथ में विभिन्न अध्यायों में सहगल के जीवन और कला से सम्बंधित विषयों का वर्णन है। लोग उन्हें अभिनेता के रूप में, गायक के रूप में, विभिन्न भाषाओं एवं शैलियों के गायक के रूप में तथा स्वरकार के रूप में जानते है। उनका शास्त्रीय गायक का रूप लोगों की मानसिकता में कम बैठने के बावजूद भी उनकी गायकी का प्रमुख आधार था । शास्त्रीय संगीत से परिचित गायक की परिपक्वता और एक भाव पूर्ण अभिनेता की भाव प्रकाशन की क्षमता दोनो ही मिलकर उनके संगीत को अद्वितीय और अतुलनीय बनाते थे। जन साधारण के शब्दों में उनके गीतों में दर्द, सोज, सुरीलापन और दिल को छू लेने वाली क्षमता थी। इस शोध ग्रंथ में इस क्षमता का विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. जीवन वृतान्त एवम् शिक्षा दीक्षा 2. कुन्दन लाल सहगल एक अभिनेता के रूप में 3. सहगल विभिन्न शैलियों और भाषाओं के गायक तथा एक संगीतकार के रूप में 4. कुन्दन लाल सहगल के प्रसिद्ध फ़िल्मी एवं गैर फ़िल्मी गीतों का विवेचन 5. कुन्दन लाल सहगल के बहुमुखी व्यक्तित्व का मूल्यांकन । परिशिष्टि, उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

473. RAMAVARAPU MADHURI DEVI

Rasa Element in the Telugu Musical Compositions of the Prominent Composers Since Annamacharya Upto 19th Century.

Supervisor : Prof. Radha Venkatachalam

Th 16792

Abstract

Deals with only the Telugu composers. Explains the origin and development of Telugu language and its antiquity. Gives a bird's eye view of the musical compositions in Telugu with regards to this aspect. Discusses about the concept of Rasa as conceived by the aesthetes and a study of the place of Bhakti among Rasas has been dealt with since almost all the Telugu compositions have chiefly deal with Bhakti. Finds out the element of Rasa in the compositions of Pre-Trinity, Trinity and Post Trinity, respectively.

Contents

1. Origin and development of Telugu language 7 Its antiquity. 2. A bird's eye view of musical compositions in Telugu. 3. The concept of Rasa as conceived by the aesthetes - The place of the element Bhakti among Rasas. 4. Rasa element in the compositions of the pre-trinity period. 5. Rasa element in the compositions of the trinity period. 6. Rasa element in the musical compositions of post trinity period. Conclusion and bibliography.

474. शर्मा (पूजा)

आकाशवाणी से प्रसार भारती तक के मध्य में शास्त्रीय संगीत : एक समालोचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. अलका नागपाल

Th 16875

सारांश

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के विस्तार की विस्तृत चर्चा की गई है । विस्तृत रूप से चर्चा की गई कि प्रसार भारती का उद्‌गम, स्थापना किस प्रकार हुई । उसका किस प्रकार विस्तार किया गया । उसके प्रशासनिक जो भी कार्यकलाप हैं उनमें किस प्रकार और क्या अंतर आया और आज इस प्रसार भारती का वर्तमान स्वरूप क्या है तथा इसकी क्या स्थिति है ।

विषय सूची

1. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन का उद्‌गम एवं विकास 2. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन

पर शास्त्रीय संगीत की स्थिति 3. प्रसार भारती का उद्‌गम, स्थापना एवं विकास 4. प्रसार भारती की स्थापना के उपरांत शास्त्रीय संगीत की स्थिति एवं विभिन्न कलाकारों के विचार। उपसंहार एवं ग्रंथ सूची ।

475. सिंह (आशा)

दिल्ली घराने के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद नसीर अहमद ख़ाँः व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

Th 16877

सारांश

प्रस्तुत शोध-कार्य में कुछ लिखित प्रमाणित तथ्य, रिकार्ड्स, भेंटवार्ता एवं तत्‌कालीन समाचार-पत्रों में ख़ाँ साहब के कार्यक्रमों की समीक्षा आदि के आधार पर कुछ शीर्षकों के द्वारा ख़ाँ साहेब के जीवन-वृत्त, उनके व्यक्तित्व के विशेष पहलुओं को उजागर करते हुए कुछ तथ्य एवं उनकी गायकी के अनेकानेक गुणों को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया है । उनकी शिक्षण विधि, उनके शिष्यों के विचार और उनके गुरू रूप का वर्णन है।

विषय सूची

1. घराना पद्धति एवं दिल्ली घराने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं शैलीगत् विशेषताएँ 2. उस्ताद नसीर अहमद ख़ाँ : एक युग पुरूष 3. ख़ाँ साहब : एक उत्कृष्ठ एवं सच्चे कलाकार 4. ख़ाँ साहब की गायकी का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण 5. ख़ाँ साहब एक गुरू के रूप में। उपसंहार ।

476. सुमन

अलंकार तथा छंद के विशेष सन्दर्भ में हिन्दुस्तानी संगीत की विभिन्न गायन शैलियों के पदों के साहित्यिक पक्ष का विवेचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

Th 16793

सारांश

शोध प्रबंध में साहित्य (काव्य) एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत सर्वप्रथम साहित्य (काव्य) का अर्थ एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा की गई परिभाषाओं का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् साहित्य एवं काव्य को समान रूप में बतलाया गया है। साहित्य के वर्णन के पश्चात् संगीत का अर्थ एवं परिभाषा को वर्णित किया गया है। अलंकार शब्द का अर्थ एवं विभिन्न विद्वानों एवं आचार्यों द्वारा दी गयी परिभाषा को प्रतिपादित किया गया है। छन्द का अर्थ बताते हुए विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं का वर्णन किया गया है। हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित गायन शैलियों- ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, ठुमरी, दादरा, सादरा, टप्पा, त्रिवट, चतुरंग, राग-सागर (राग माला) तथा स्वर-सागर इत्यादि का परिचय दिया गया है तथा इनके उत्पत्ति एवं इनके गायन प्रणाली पर प्रकाश डाला गया है। विभिन्न गायन शैलियों ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, सादरा, टप्पा, दादरा, राग-सागर (राग माला) स्वर-सागर इत्यादि के बन्दिशों के पदों में उपस्थित कठिन शब्दों का अर्थ बतलाते हुए सरल शब्दावली में इनकी साहित्यिक व्याख्या की गयी है ।

विषय सूची

1. साहित्य (काव्य) एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत 2. अलंकार परिचय - अर्थ, परिभाषा एवं विभिन्न प्रकार 3. 'छन्द' का अर्थ एवं विश्लेषण 4. हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित गायन शैलियों का परिचय 5. अलंकार तथा छंद के संदर्भ में गायन शैलियों के पदों का साहित्यिक विवेचना । उपसंहार एवं संदर्भ गंथ सूची ।

477. हनुमान कुमार

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में हारमोनियम का विकास एवं निर्माण प्रक्रिया।

निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

Th 16874

सारांश

सुषिर वाद्य की शब्द उत्पत्ति, सुषिर शब्द का अर्थ वाद्य की परिभाषा, वाद्यो का प्रकार प्राचीन सुषिर वाद्यों का उल्लेख किया गया है । हारमोनियम के विभिन्न प्रकारों का वर्णन किया गया है आज लगभग हारमोनियम के 25 प्रकार प्रचार में है जैसे बैबी,

सादा, सात स्टॉप, चुड़िदार, कप्लय साढ़ेतीन, सफरी, कलकत्त मॉडल, स्केल चैन्जर आदि । इन सभी की बनावट, आकार, रीड आदि पर प्रकाश डाला गया । लोक संगीत में हारमोनियम का महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है ।

विषय सूची

1. हारमोनियम का इतिहास 2. हारमोनियम के निर्माण में प्रयुक्त सामग्री 3. हारमोनियम के विभिन्न प्रकार 4. उत्तर भारतीय संगीत में हारमोनियम का महत्त्व 5. उत्तर भारतीय संगीत में हारमोनियम का महत्त्व 6. संरक्षण एवं रख रखाव के सुझाव । उपसंहार एवं ग्रंथ सूची ।

478. हरमीत कौर

20वीं शताब्दी से विख्यात शब्द-कीर्तन गायक-कलाकारों का विवेचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. अलका नागपाल

Th 16787

सारांश

शोध प्रबंध में सिक्ख धर्म के ऐतिहासिक परिचय के अन्तर्गत सिक्ख शब्द का अर्थ, सिक्ख धर्म की उत्पत्ति के कारण एवं श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के ऐतिहासिक परिचय की चर्चा की है । श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में अंकित गुरूओं एवं भक्तों का परिचय देते हुए उनके सांगीतिक योगदान पर प्रकाश डाला है । शब्द कीर्तन की ऐंतिहासिक परम्परा की विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है । जिसके अन्तगर्त शब्द-कीर्तन का अर्थ, गुरूवाणी में उसका स्थान, ऐतिहासिक गुरमत संगीत परम्परा, उसकी विभिन्न शैलियाँ, उसके अन्तगर्त प्रयोग होने वाले वाद्य तथा प्रारम्भिक रबाबी एवं कीर्तन गायकों का परिचय दिया गया है। वर्तमान समय की विभिन्न शब्द-कीर्तन पद्धतियों पर चर्चा करते हुए 20वीं शताब्दी के कुछ प्रसिद्ध शब्द कीर्तन गायकों एवं कलाकारों का जीवन वितान्त, उनकी सांगीतिक उपलब्धियाँ एवं उनकी गायन शैली की चर्चा विस्तार से की गयी है। 20वीं शताब्दी के कीर्तनकारों, रागी संगीतज्ञों एवं संगीत विद्वानों द्वारा किया गया स्वरलिपिबद्ध एवं उनकि द्वारा गाई एवं रची हुई बन्दिशों की स्वरलिपियाँ भी दी गई है ।

1. सिक्ख धर्म का ऐतिहासिक परिचय 2. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में अंकित सिक्ख गुरूओं एवं अन्य भक्त कवियों का परिचय एवं योगदान 3. शब्द-कीर्तन की ऐतिहासिक परम्परा 4. 20वीं शताब्दी से विख्यात शब्द-कीर्तन गायक-कलाकारों का परिचय एवं योगदान 5. कीर्तनकारों, रागी संगीतज्ञों एवं संगीत विद्वानों द्वारा किया गया कार्य एवं स्वरलिपियाँ । उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रन्थ सूची ।

M.Phil Dissertations

479. अरोड़ा (निधि)
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कुछ नवीन रागों का विश्लेषणात्मक एवम् आलोचनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. सुदीप्ता शर्मा

480. ARORA (Rachita)
Technological Development in the Field of Music Recording and Production.
Supervisor : Dr. Ojesh Pratap Singh

481. कुलविंदर कौर
समाज के नैतिक उत्थान में भक्ति संगीत की उपयोगिता (आधुनिक संदर्भ में)।
निर्देशिका : प्रो. सुनीताधर

482. जतिन कुमार
चित्रपट संगीत निर्देशन के क्षेत्र में आए परिवर्तनों पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. अलका नागपाल

483. जावेद खान
इन्दौर घराने के महान संगीतज्ञ उस्ताद मुनीर खाँ साहब का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।
निर्देशिका : प्रो. मंजुश्री त्यागी

484. TYAGI (Radha)
Film Director Naushad's Contribution to Hindustani Classical Music.
Supervisor : Prof. Madhubala Saxena

485. दत्ता (प्रणामिका)
आसाम के कुछ प्रचलित अवनद्य वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

486. दिवेकर (मंजुश्री)
महाराष्ट्रीय लोकसंगीत लावणी का विवेचनात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी

487. नेगी (सरिता)
किन्नौरी लोकसंगीत - एक विवेचनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. नज़मा परवीन अहमद

488. PAI (Prasanth G)
Analytical Study About Different Devi Cults as Depicted in Various Krtis of Sri Muthuswamy Dikshitar.
Supervisor : Dr. T. V. Manikandan

489. पाण्डे (नीता)
आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सूफ़ी संगीत का शास्त्रीय संगीतात्मक पक्ष ।
निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

490. भटनागर (दिशा)
आधुनिक परिप्रेक्ष्य में तराना का सौन्दर्य बोध ।
निर्देशक : डॉ. प्रतीक चौधरी

491. मुखोपाध्याय (अरिन्दम)
पंडित विनय चन्द्र मौदगल्य जी का संगीत के क्षेत्र में योगदान ।
निर्देशक : डॉ. ओजेश प्रताप सिंह

492. RAMAN (Saroja)
Influence of Karnatic Classical Music on Temples of South India.
Supervisor : Dr. P. B. Kannakumar

493. राय (बिपुल कुमार)
भारतीय शास्त्रीय संगीत में संतूर एक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. नूपुर राय चौधुरी

494. वत्स (नेहा)
बंगाल के लोकसंगीत का शास्त्रीय पक्ष एवम् सौंदर्यात्मक स्वरूप ।
निर्देशिका : प्रो. अंजली मित्तल

495. विजय कुमार
बाँसुरी वादन का ऐतिहासिक विवेचन एवं आधुनिक शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में इसका योगदान ।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

496. VIDYA RAJA
In-Depth Study on Sampradaya Bhajana Paddhati.
Supervisor : Dr. Vasanthy Krishna Rao

497. शर्मा (तृप्ति)
पण्डित रामाश्रय झा रामरंग की बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. ओजेश प्रताप सिंह

498. शर्मा (विनीत)
मीरा के पदों का संगीतात्मक पक्ष ।
निर्देशक : डॉ. मदन शंकर मिश्रा

499. सिंह (गीताजंली)
बनारस घराने की ठुमरी गायकी ।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

500. सिंह (शुप्रीत)

दिल्ली एवं आस-पास होने वाले शास्त्रीय संगीत सम्मेलन : एक सर्वेक्षण।

निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास

501. सिमरप्रीत कौर

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में वर्णित राग गउड़ी के विभिन्न प्रकारों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी